हमारी बात

कार्यशालाओं में, यहां-वहां, शहर और गांव की बहनों से मिल कर एक बात उभर रही है। वह है आपसी बहनापे के रिश्ते की जरूरत की बात। बहनापा सिर्फ़ बहनों या सहेलियों के बीच नहीं होता। वह मां-बेटी, सास-बहू, ननद-भाभी या पड़ौसिनों के बीच हो सकता है। यह सुनने में अजीब लगता है। क्योंकि हमारे समाज में रिश्तों की परिभाषाएं तय कर दी गई हैं। मिसाल के तौर पर ननद-भाभी या सास-बहू का रिश्ता। सब यह मान कर चलते हैं कि यह रिश्ता प्यार और सहयोग भरा हो ही नहीं सकता।

जब हम समाज में बदलाव की बात कर रहे हैं तो क्यों नहीं रिश्तों की परिभाषा बदलने की बात करते। सिर्फ़ बात ही नहीं, पूरी कोशिश करनी चाहिए। यह कोशिश पुरुषों के साथ हमारे रिश्ते की परिभाषा पर भी लागू होगी। हम तय करें कि जीवन साथी का क्या मतलब है।

अभी हम बहनापे की बात कर रहे हैं, जो औरत औरत के बीच बनना चाहिए। यह बहनापा खून के रिश्तों में भी पैदा किया जाना चाहिए और बाहर भी। इस बहनापे में होगी एक दूसरे के दुख-दर्द की समझ। एक दूसरे पर भरोसा और वक्त पड़ने पर एक दूसरे की मदद।

कितनी औरतों को कहते सुनती हूं "मां ने साथ दिया तो मैं आगे बढ़ पाई।" "सास ने बच्चे संभाले तो मैं नौकरी कर सकी।" सहारे और सहयोग के इन रिश्तों का दायरा फैलाना पड़ेगा। इन्हें मजबूत बनाना पड़ेगा। किसी न किसी को सहारा देना पड़ेगा।

हम इस बात को समझें कि एक व्यवस्था के तहत औरतें असमानता की शिकार हैं। अगर हम एक दूसरे की मदद के लिए हाथ थाम लें तो क्या नहीं हो सकता। घर में जलाई जाने वाली बहुओं की जान बच सकती है। बेटी और पत्नी पर अत्याचार कम हो सकते हैं। दफ्तर में यौन शोषण से निपटा जा सकता है। सोचिए! कितनी संभावनाएं हैं। क्यों न इन संभावनाओं को वास्तविकता में बदलने का संकल्प लें।

—वीणा